बाईबिल प्रश्नोत्तरी

बाईबिल से सम्बन्धित प्रश्न और उनके उत्तर

क्रिस्टडेल्फियन्स
(मसीह में भाई और बहन)

विषयसूचि

पुस्तिका के विषय में (About this booklet)....................................3
चेतावनी (A warning)...5
1. बाईबिल (The Bible)..6
2. परमेश्वर (God)..7
3. मनुष्य (Man)..8
4. नरक (Hell)..10
5. यीशु मसीह: उद्धारकर्ता (Jesus Christ: the saviour)................12
6. यीशु मसीह: उनका पुनर्रूत्थान (Jesus Christ: his resurrection).14
7. यीशु मसीह: उनका स्वर्गारोहण (Jesus Christ: his ascension). .15
8. यीशु मसीह: पृथ्वी पर पुन: आगमन (Jesus Christ: his return to earth)..16
9. यीशु मसीह: भविष्य के राजा (Jesus Christ: the future king)....17
10. परमेश्वर का राज्य (The kingdom of God)..........................18
11. सुसमाचार और प्रतिज्ञायें (The gospel & the promises)..........20
12. पुनर्रूत्थान, न्याय और अनन्त जीवन (Resurrection, judgment & eternal life)...22
13. पवित्र आत्मा (The Holy Spirit)...26
14. स्वर्गदूत (Angels)...29
15. पाप, शैतान और दुष्टात्मा (Sin, Satan, & the devil)...............30
16. दुष्ट आत्मायें और अशुद्ध आत्मायें (Demons & unclean spirits). 32
17. अनन्त जीवन का मार्ग (The way to eternal life)....................33
18. बपतिस्मा (Baptism)..34
19. मसीही जीवन (The Christian life)..36

बाईबिल प्रश्नोत्तरी (Bible Q & A)

पुस्तिका के विषय में (About this booklet)

एक सच्चा मसीही बनने का केवल एक ही तरीका है, और वह है परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना और मसीह में बपतिस्मा लेना (गलातियों 3:27)। बपतिस्में का आधार, व्यक्तिगत मनफिराव, और परमेश्वर व उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करना है।

लेकिन बपतिस्मा लेने से पहले बाईबिल की शिक्षाओं को समझना और उन पर विश्वास करना जरूरी है (प्रेरितों के काम 8:12) और यह पुस्तिका बाईबिल की शिक्षाओं को समझने और उन पर विश्वास करने में आपकी सहायता करेगी।

इस पुस्तिका के प्रत्येक भाग में एक या एक से अधिक प्रश्न दिये गये है। प्रत्येक प्रश्न के एक या अधिक (a,b,c) उत्तर दिये गये है ये उत्तर बहुविकल्पिय नही है बल्कि सभी सम्भावित उत्तर है जिनको विद्यार्थी उत्तर के रूप में दे सकते है।

इस पुस्तिका को कैसे प्रयोग करें (How to use this booklet)

- *पढने में जल्दबाजी ना करें (Don't rush)*

बाईबिल का अध्ययन जल्दबाजी में ना करें। बाईबिल को अच्छी तरह से समझने के लिए, कम से कम एक वर्ष या दो वर्ष तक इसका

अध्ययन करना चाहिए और इसे अच्छी तरह समझने के बाद ही इसके प्रति वचनबद्ध होना चाहिए, जो आपके शेष जीवन को प्रभावित करेगा। यदि आप लम्बे समय से बाईबिल का अध्ययन कर रहे है तो आप कुछ महीनों में ही इस पुस्तिका को पढकर समझ सकते है।

- *समझने के लिए प्रयासरत रहें (Make the effort)*

कठिन परिश्रम से अपना बाईबिल अध्ययन करें, क्योंकि अनन्त जीवन एक बहुमूल्य पुरूस्कार है। प्रतिदिन कम से कम आधा घण्टा बाईबिल अवश्य पढें, और जो आप पढते है उसके विषय में मनन करें।

- *एक समय में एक ही प्रश्न को समझने का प्रयास करें (Take one question at a time)*

प्रश्न और इसके उत्तर को पढे, इसके बाद उत्तर में दिये बाईबिल के पदों को बाईबिल से पढे। जब आपको यह लगे कि आप इस प्रश्न और उसके उत्तर को समझ गये है और इस उत्तर से सहमत है तो इसके बाद ही अगले प्रश्न को पढें।

- *समझ में न आने पर सहायता लें (Ask if you do not understand)*

हो सकता है कि बाईबिल के कुछ पद आपको समझ में न आये, या हो सकता है कि कुछ उत्तरों से आप सहमत ना हो। यदि ऐसा हो तो निसंकोच इसके विषय में क्रिस्टेडेलिफ्यन बाईबिल अध्यापक से पूछें, वह हमेशा आपकी सहायता के लिए तैयार रहेगा।

- *मित्र के साथ अध्ययन करें (Study with a friend)*

जंहा तक सम्भव हो दूसरे लोगों के साथ मिलकर बाईबिल अध्ययन करने का प्रयास करें। इस प्रकार अध्ययन करने से आप बाईबिल को एक दूसरे की सहायता से अच्छी तरह से समझ सकते है।

- *प्रतिदिन बाईबिल पढें (Read your Bible daily)*

इस पुस्तिका को पढने के साथ साथ आपको बाईबिल के एक या दो अध्यायों को भी प्रतिदिन पढना चाहिये। बाईबिल कम्पेनियन या बाईबिल रीडिंग कलेण्डर की सहायता से आप प्रतिदिन बाईबिल का अध्ययन कर सकते है, ऐसे अध्ययन करने से आप एक वर्ष में पुराना नियम एक बार तथा नया नियम दो बार समाप्त कर लेगें। यह बाईबिल कम्पेनियन आप क्रिस्टेडेलफियन मीटिंग हॉल से या इस पुस्तिका के प्रकाशक से प्राप्त कर सकते है।

चेतावनी (A warning)

इस पुस्तिका के शब्दों को याद रखना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि बाईबिल की शिक्षाओं को याद रखना महत्वपूर्ण है। लेकिन यदि आपको इस पुस्तिका के प्रश्नों और उत्तरो को याद रखने से सहायता मिलती है तो आप ऐसा कर सकते है। लेकिन जो भी बातें आप सीखते है उनको समझकर सीखें। परमेश्वर उन लोगों को चाहता है जो विश्वास करते है, जो लोग बातों को बिना समझे केवल दोहराते रहते है, उनको परमेश्वर नहीं चाहता। प्रेरितों के दिनों में विश्वासियों के लिए "बहुत से गवाहों के सामने पाप अंगीकार करना" एक सामान्य

बात थी (1 तीमुथियुस 6:12)। इसलिए मसीह में बपतिस्मा लेने से पहले आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर देकर यह बताना होता है कि आप बाईबिल की शिक्षाओं पर विश्वास करते है और उनके अनुसार अपना जीवन बिताने के लिए तैयार है। बपतिस्में से पहले पूछे जाने वाले प्रश्न बिल्कुल ऐसे नही होते है जो इस पुस्तिका में दिये गये है लेकिन इस पुस्तिका की शिक्षायें उन प्रश्नों के उत्तर देने में आपके लिए सहायक होगी।

अत: आपको हमारी सलाह है कि आप इस पुस्तिका की बातों को समझकर सीखें।

1. बाईबिल (The Bible)

1.1 बाईबिल एक विशेष पुस्तक क्यों है?

(a) बाईबिल ही केवल एकमात्र पुस्तक है जो हमें, परमेश्वर के विषय में, प्रभु यीशु मसीह के विषय में और उद्धार के विषय में सच्चा ज्ञान देती है। (इब्रानियों 1:1-2; भजन संहिता 138:2; 2 तीमुथियुस 3:16; भजन संहिता 119:160)

(b) बाईबिल उन लोगों के द्वारा लिखी गयी जो परमेश्वर की पवित्र आत्मा से प्रेरित थे। (2 पतरस 1:21; 1 पतरस 1:11; इब्रानियों 1:12)

(c) जो लोग बाईबिल पर विश्वास करते है और इसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताते है, वे अनन्त जीवन के अधिकारी होंगे, बाईबिल ऐसा वायदा करती है। (यूहन्ना 17:3; रोमियों 2:7; 2 पतरस 1:11)

1.2 बाईबिल के सन्देश को हम अच्छी प्रकार कैसे समझ सकते है?

(a) बाईबिल के सन्देश को समझने के लिए और उस पर विश्वास करने के लिए हमें नियमित रूप से बाईबिल को पढना चाहिये और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह इसको समझने के लिए हमें बुद्धि दें। (1 तीमुथियुस 4:13; भजन संहिता 119:103-105; यिर्मयाह 15:16, 9:24)

2. परमेश्वर (God)

2.1 परमेश्वर के विषय में बाईबिल क्या बताती है?

(a) बाईबिल बताती है कि वह अद्वैत सच्चा परमेश्वर है। (यशायाह 44:8, 45:5; निर्गमन 20:3; इफिसियों 4:6)

(b) परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना 4:24)

(c) परमेश्वर सृष्टिकृता है। (उत्पत्ति 1:1; यशायाह 45:18)

(d) सबकुछ परमेश्वर के नियन्त्रण में है, वह सबकुछ जानता है, यहां तक कि वह हमारे विचारों को भी जानता है। (यशायाह 45:7; भजन संहिता 139:1-12)

(e) परमेश्वर त्रिएक नहीं है, बल्कि एक है। (व्यवस्थाविवरण 6:4; 1 कुरिन्थियों 8:6; मलाकी 2:10; मरकुस 12:29)

(f) परमेश्वर पवित्र और सच्चा है। (निर्गमन 15:11; यशायाह 6:3; भजन संहिता 19:9)

(g) परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी है। (निर्गमन 34:6; रोमियों 2:4; भजन संहिता 103:8-14)

(h) ईश्वर न्यायी है, और वह धर्मियों को पुरूस्कार और दुष्टों को

दण्ड देता है। (व्यवस्थाविवरण 32:4; भजन संहिता 145:20; रोमियों 1:18)

(i) परमेश्वर के पास, भविष्य में, इस पृथ्वी और मानवजाति के लिए योजना है। (गिनती 14:21; यशायाह 45:18; प्रकाशितवाक्य 21:1-4)

(j) परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह का पिता है। (मत्ती 3:17; लूका 1:31-35; इब्रानियों 1:2-5; 1 पतरस 1:3)

3. मनुष्य (Man)

3.1 मनुष्य जाति को कैसे बनाया गया?

(a) मनुष्य को "परमेश्वर के स्वरूप" में रचा गया। पहला आदमी परमेश्वर ने भूमि की मिटटी से बनाया और उसके नथनों में जीवन की श्वांस फूंक दी और वह जीवता प्राणी बन गया। (उत्पत्ति 1:27, 2:7)

3.2 क्या बाईबिल इस सिद्धान्त से सहमत है कि मनुष्य का विकास जानवरों से हुआ है?

(a) नही। बाईबिल बताती है कि परमेश्वर ने पहला आदमी, आदम और पहली स्त्री, हव्वा को बनाया, और इस प्रकार बाईबिल इस सिद्धान्त का खण्डन करती है। और बाईबिल बताती है कि दूसरे सभी आदमी और स्त्री, आदम और हव्वा के वंशज है। (उत्पत्ति 1:27, 3:20; मत्ती 19:4; रोमियों 5:12)

3.3 बाईबिल इस बात की व्याख्या कैसे करती है कि प्रत्येक मनुष्य मरता है?

(a) आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर द्वारा उसको मृत्युदण्ड दिया गया। आदम के वंशज होने के कारण यह मृत्यु दण्ड सम्पूर्ण मानवजाति में फैल गया और हम सब स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के अनआज्ञाकारी है। (उत्पत्ति 3:1-19; रोमियों 3:9-10; यिर्मयाह 17:9; मरकुस 7:21-23; रोमियों 5:12)

3.4 पाप क्या है?

(a) जब भी हम परमेश्वर की आज्ञा को तोडते है तो हम पाप करते है। और अपने पाप को ना पहचानना भी पाप ही है। (1 यूहन्ना 3:4; लैव्यव्यवस्था 4:21)

3.5 लोग क्यों मरते है?

(a) पाप के दण्ड स्वरूप मृत्यु इस जगत में आयी। (उत्पत्ति 2:11, रोमियों 6:23, यहेजकेल 18:4)

3.6 जब लोग मर जाते है तो उनका क्या होता है?

(a) जब लोग मर जाते है तो उसके बाद वे विद्यमान नही रहते है। मरे हुए लोग कुछ नहीं सोच सकते और न ही वे कुछ कर सकते है और ना कुछ महसूस कर सकते है। वे स्वप्न रहित गहरी नींद के समान अचेत हो जाते है। (भजन संहिता 6:5, 49:12, 14:20, 146:3-4; सभोपदेशक 9:5-6; यूहन्ना 11:11-14)

3.7 क्या मेरी मृत्यु के बाद मेरी आत्मा जीवित रहेगी?

(a) नही। बाईबिल अविनाशी आत्मा के विषय में नहीं बताती है। बाईबिल में "आत्मा" शब्द केवल जीवित प्राणियों के लिए आया है,

चाहे वे मनुष्य हो, जानवर हो, पक्षी हो या कोई अन्य जीव जन्तु हो। बाईबिल आत्माओं की मृत्यु के विषय में बताती है। उत्पत्ति 1:21 और 1:24 में जो शब्द "जीवित प्राणी" प्रयोग किया गया है, बिल्कुल वही शब्द उत्पत्ति 2:7 में मनुष्य के लिए भी "जीवता प्राणी" प्रयोग हुआ है। यही शब्द गिनती 6:6 में प्रयोग हुआ है जहाँ मूल भाषा में "मृत व्यक्ति" को "मृत आत्मा" कहा गया है। (गिनती 3:28; यहेजकेल 18:4,20; भजन संहिता 89:48)

3.8 क्या इस वर्तमान जीवन के अलावा भी हमारे लिए कोई आशा है?

(a) हाँ, लेकिन केवल यीशु मसीह के द्वारा। यीशु मसीह ने पाप और मृत्यु दोनों पर विजय प्राप्त की। जब यीशु मसीह पुन: इस पृथ्वी पर वापिस आयेगें तो वह मृतकों को जीवित करेगें, और उनका न्याय करेगें। विश्वासी लोगों को उसके राज्य में अनन्त जीवन दिया जायेगा। (2 तीमुथियुस 1:10; 1 कुरिन्थियों 15:21-23; दानिय्येल 12:2-3; यूहन्ना 5:28-29; मत्ती 25:31-34)

(भाग 12 में आप मनुष्य के विषय में ओर अधिक पढेंगे)

4. नरक (Hell)

4.1 नरक क्या है?

(a) अंग्रेजी बाईबिल के नये नियम में मूल भाषा के दो शब्दों "हेदेस" (Hades) और "गेहेना" (Gehenna) को "नरक" (Hell) अनुवादित किया गया है। जबकि बहुत सी ऐशियन बाईबिलों में इन दो शब्दों को, अग्रेजी बाईबिलों की अपेक्षा कही अधिक सही अनुवादित किया

गया है। ये दो "नरक" अलग अलग समय पर स्थित है: हेदेस केवल यीशु मसीह की पुन: वापिसी तक स्थित है, और गेहेना केवल यीशु मसीह की पुन: वापिसी के बाद स्थित रहेगा। (प्रकाशितवाक्य 1:8 के हेदेस की तुलना लूका 12:5 के गेहेना से करें।)

4.2 हेदेस (Hades) क्या है?

(a) अग्रेंजी भाषा की बाईबिल में जहां कही भी नरक (Hell) शब्द आया है वह मूल भाषा के शब्द हेदेस (Hades) का अनुवाद है, जिसका अर्थ है कब्र। पुराने नियम में कब्र के लिए प्रयोग हुए शब्द शिओल (Sheol) को, नये नियम में हेदेस शब्द में अनुवादित किया गया है। हेदेस या शिओल अर्थात कब्र में कोई ज्ञान या कार्य नही रहता (सभोपदेशक 9:5,10; यहेजकेल 32:27-29; मत्ती 11:23, 16:18)

4.3 कौन लोग हेदेस (Hades) में जाते है?

(a) प्रत्येक व्यक्ति चाहे अच्छा हो या बुरा, पुनरूत्थान होने तक वे हेदेस (Hades) में सो जाते है। जब यीशु मसीह को दफनाया गया तो वह भी नरक (हेदेस) मं गया, और जब वह मृतको में से जिलाया गया तो वह नरक (हेदेस) से बाहर आये। (प्रेरितों के काम 2:27-31)

4.4 नरक की आग क्या है?

(a) नया नियम सबसे पहले यूनानी (Greek) भाषा में लिखा गया; और प्रभु यीशु मसीह द्वारा प्रयोग किया गया शब्द, "नरक की आग" वास्तव में "गहन्ना (Gehenna) की आग" है। (मत्ती 10:28; याकूब 3:6)

4.5 गहन्ना (Gehenna) क्या है?

(a) यह वास्तव में पृथ्वी पर एक स्थान का नाम है। यरूशलेम की दक्षिण-पश्चिम की ओर हिन्नौम की घाटी या गहन्ना की घाटी एक वास्तविक स्थान है। पुराने नियम के समय में इस्राएली लोग इस स्थान पर अपने बच्चों को आग में बलि किया करते थे (यिर्मयाह 32:35)। बाद में इस स्थान पर येरूशलेम का कूड़ा जलाया जाने लगा। इसी के परिणाम स्वरूप नये नियम के समय में इस स्थान की आग को यह कहकर प्रदर्शित किया जाने लगा कि जिस प्रकार गहन्ना (Gehenna) की आग येरूशलेम के कूड़े को जलाकर राख कर देती है उसी प्रकार दुष्ट लोग भी इस स्थान की आग के समान जलाकर नष्ट किये जायेगें। प्रभु यीशु मसीह ने एक दृष्टान्त के रूप में शब्द गहन्ना (Gehenna) का प्रयोग किया, लेकिन यह भी सम्भव है कि पुराने नियम व नये नियम में वर्णित, न्याय की आग, गहन्ना की घाटी में ही होगी। (यशायाह 66:24; मरकुस 9:44,46,48; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9)

5. यीशु मसीह: उद्धारकर्ता (Jesus Christ: the saviour)

5.1 यीशु मसीह कौन है?

यीशु मसीह परमेश्वर का इकलौता प्रिय पुत्र है। उनका कोई मानवीय पिता नही है, बल्कि परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा, एक कुवांरी गर्भवती हुयी और इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ। (लूका 1:32;35; मत्ती 1:20-25, 3:17; यूहन्ना 1:49, 10:36)

वे एक मनुष्य थे, जो पैदा हुए और बढते गये, उन्हें भूख लगी, प्यास

लगी, वे रोये, उन्हें पीडायें हुयी और वे दूसरे मनुष्यों के समान मरें। (इब्रानियों 2:11; लूका 2:52; यशायाह 53:3; यूहन्ना 11:35, 19:33)

5.2 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने क्या कार्य किया?

(a) उन्होनें, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, अपने पिता को इस जगत में प्रगट किया, ताकि यह जगत उसको समझ सकें। (यूहन्ना 1:1-8, 12:45, 14:9, 17:6,26)

(b) प्रभु यीशु मसीह ने अपने पिता के अदभुत गुणों को दिखाया, जैसे – पवित्रता, धार्मिकता और प्रेम। (यूहन्ना 1:14; रोमियों 3:24-26)

(c) उन्होनें मसीही सेवा और आज्ञाकारिता का सम्पूर्ण अर्थ संसार को दिखाया। (लूका 22:42; यूहन्ना 5:30, 8:24)

(d) उन्होनें सुसमाचार का प्रचार किया। (लूका 4:18, 9:6, 20:1)

(e) उन्होनें हमारे लिये अपने प्राण दिये। (यूहन्ना 10:11,15; प्रेरितों 2:23)

(f) वे फिर से हमें परमेश्वर की निकटता में लेकर आये। (इफिसियों 2:16; रोमियों 5:10; यूहन्ना 14:6)

5.3 प्रभु यीशु मसीह हमें किस प्रकार परमेश्वर की निकटता में ला सकते है?

(a) हम उन बच्चों के समान है जो अपने पिता से दूर भाग जाते है। हम अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर है। प्रभु यीशु मसीह अपने निष्पाप जीवन और मृत्यु के द्वारा हम लोगों को परमेश्वर की निकटता में लाने में समर्थ है। मरियम से पैदा होने के कारण यीशु मसीह एक मनुष्य थे, लेकिन साथ ही वह परमेश्वर की पवित्र आत्मा

के द्वारा पैदा होने के कारण परमेश्वर के पुत्र भी है। (इब्रानियों 2:14,17-18)

(b) इसलिए प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि और परमेश्वर के सम्मुख हमारे प्रतिनिधि दोनों है। बाईबिल उनको परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में बिचवई बताती है। मनुष्य होने के कारण वे हमारे समान परखे गये; लेकिन तो भी उन्होनें हमेशा पाप पर विजय प्राप्त की। उन्होनें सब बातों में परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया, और विशेषकर हमारे पापों के लिए क्रूस की मृत्यु को भी सह लिया। (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 4:15-16)

(c) जब हम बपतिस्मा लेकर प्रभु यीशु मसीह के इस कार्य में अपने सच्चे विश्वास को दिखाते है तो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करके, हमें अपने बच्चों के रूप में स्वीकार कर लेता है (2 कुरिन्थियों 5:21; रोमियों 8:2-4)

6. यीशु मसीह: उनका पुनर्रूत्थान (Jesus Christ: his resurrection)

6.1 प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के बाद उनके साथ क्या हुआ?

(a) उनको दफनाया गया, लेकिन तीसरे दिन परमेश्वर ने उन्हें सशरीर, सदा सर्वदा के लिए जीवित रहने के लिए, जिला उठाया। (मत्ती 27:57-60, 28:1-7; लूका 24:39; प्रेरितों के काम 2:30-32, 3:15, 4:10, 5:30-31; रोमियों 1:4; 1 कुरिन्थियों 15:3-4,20; प्रकाशितवाक्य 1:18)

6.2 प्रभु यीशु मसीह के साथ ऐसा क्यों हुआ?

(a) क्योंकि वे निष्पाप थे इसलिए उनका मृत्यु के वश मे रहना असम्भव था – जैसा बाईबिल में लिखा है कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" इसलिए परमेश्वर ने उन्हें मृतको में से जिला उठाया। (रोमियों 6:23; प्रेरितों के काम 2:24; फिलिप्पियों 2:8)

(b) प्रभु यीशु मसीह को मृतको में जिलाकर, परमेश्वर ने हमें यह दिखाया कि यदि हम सच्चाई से यीशु मसीह का अनुसरण करते है तो परमेश्वर हमें किस प्रकार का पुरस्कार देने जा रहा है। यदि हम सम्पूर्ण हृदय से प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते है और उनका अनुसरण करने के लिए कठिन परिश्रम करते है, तो अन्तिम दिन हम भी मृतको में से जिलाये जायेगें। (पुस्तिका का भाग 12 भी इसके विषय में बताता है।) (1 कुरिन्थियों 15:21-23; 2 कुरिन्थियों 4:14)

7. यीशु मसीह: उनका स्वर्गारोहण (Jesus Christ: his ascension)

7.1 प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग में क्यों गये?

(a) पुनरूत्थान के 40 दिन बाद प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर द्वारा सशरीर स्वर्ग में उठा लिये गये। परमेश्वर ने उन्हें सब मनुष्यों और स्वर्गदूतों से भी अधिक उच्च स्थान दिया – परमेश्वर के बाद इस ब्रह्माण्ड में दूसरा सर्वोच्च स्थान। (इब्रानियों 1:3-4; फिलिप्पियों 2:9-10; प्रकाशितवाक्य 5:12-13)

(b) प्रभु यीशु मसीह अब परमेश्वर के एकमात्र सच्चे याजक है, जिनके नाम से हम परमेश्वर से प्रार्थना करते है और परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। वे स्वंय भी हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना

करते है। (रोमियों 8:34; इब्रानियों 4:14-15; इब्रानियों 7:24-27)

8. यीशु मसीह: पृथ्वी पर पुन: आगमन (Jesus Christ: his return to earth)

8.1 हम कैसे जानते है कि प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर पुन: आयेंगे?

(a) परमेश्वर ने पुराने नियम में यह वायदा किया है (भजन संहिता 110:1-2; दानिय्येल 7:13-14)

(b) प्रभु यीशु मसीह ने भी अपने चेलो से वायदा किया कि वे वापिस आयेंगे। (मत्ती 16:27; प्रकाशितवाक्य 22:12)

(c) स्वर्गदूतों ने भी प्रभु यीशु मसीह के चेलो से वायदा किया कि जिस रीति से वे स्वर्ग को जाते है उसी रीति से वापिस आयेंगे (प्रेरितों के काम 1:11)

(d) प्रेरितों ने भी प्रभु यीशु मसीह के पुन: आगमन के विषय में बताया। (प्रेरितों के काम 3:20-21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)

8.2 प्रभु यीशु मतीमुसीह कब वापिस आयेंगे?

(a) कोई भी उस घडी या उस दिन को नही जानता। (मरकुस 13:32) लेकिन प्रभु यीशु मसीह निकट भविष्य में, परमेश्वर द्वारा निर्धारित किये गये समय पर, आयेंगे। (प्रेरितों के काम 17:31; रोमियों 2:6,16)

8.3 क्या इस बात का कोई संकेत है कि प्रभु यीशु मसीह का पुन: आगमन निकट है?

(a) यह्रदि लोग इस्राएल में वापिस पहुंच गये है, और येरूशलेम अब अन्य जातियों के नियन्त्रण में नही है। (लूका 21:24)

(b) आज इस संसार में संकट, डर और अधर्म बहुत बढ गया है, या कह सकते है कि चरम सीमा पर है। (लूका 21:25-26; मत्ती 24:36-41; 2 तीमुथियुस 3:1-4; यहेजकेल 37:21-28)

(c) सौ साल पहले इस्राएल नाम का कोई राष्ट्र नही था। उस समय तुर्की लोग वहां रहते थे। बहुत से अरबी लोग वहां रहते थे, लेकिन यह्रदी केवल कुछ हजार ही थे। आज इस्राएल एक मजबूत राष्ट्र है और लगभग 30 लाख यह्रदी आज वहां रहते है। यह इस बात का एक बहुत ही स्पष्ट संकेत है कि परमेश्वर का राज्य निकट है। (यिर्मयाह 30:3, 21-24; यहेजकेल 36:24-23, 37:21-28)

9. यीशु मसीह: भविष्य के राजा (Jesus Christ: the future king)

9.1 क्या यीशु मसीह राजा बनने के लिए पैदा हुए?

(a) हाँ, यीशु मसीह "यह्रदियों के राजा" थे। पिलातुस के सामने उन्होनें कहा कि वे राजा है, और जब वे मरे तो उनके क्रूस पर यह दोष पत्र लगाया गया कि, "यीशु नासरी यह्रदियो का राजा।" प्रभु यीशु मसीह राजाओं के राजा होगें। (मत्ती 2:2; यूहन्ना 18:37, 19:19; भजन संहिता 72:11; प्रकाशितवाक्य 19:16)

9.2 प्रभु यीशु मसीह यह्रदियो पर राज्य कब करेगें?

(a) जब वे पुन: इस पृथ्वी पर आयेंगे। (मत्ती 19:28; लूका 19:11-12,15)

9.3 प्रभु यीशु मसीह कहाँ राज्य करेंगे?

(a) वे यरूशलेम में दाऊद के सिहांसन पर बैठकर राज्य करेंगे। (लूका 1:32; यशायाह 9:6-7; मत्ती 5:35; जकर्याह 6:12-13)

9.4 क्या प्रभु यीशु मसीह केवल यहूदी लोगों के ऊपर राज्य करेगें?

(a) नही। सबसे पहले वे इस्राएल के ऊपर राज्य करेगें और उसके बाद वे इस विश्व के हर एक राष्ट्र पर राज्य करेगें। (यिर्मयाह 23:5-6; भजन संहिता 72:8; यशायाह 2:34; जर्कयाह 14:9)

10. परमेश्वर का राज्य (The kingdom of God)

10.1 क्या पहले भी कभी पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य था?

(a) हाँ, इस्राएल का राज्य, परमेश्वर का राज्य कहलाता है। जब प्रभु यीशु मसीह पुनः इस पृथ्वी पर आयेगें तो वे इस्राएल के राज्य को पुनः स्थापित करेंगे, लेकिन परमेश्वर का यह राज्य, इस्राएल के उस पुराने राज्य से कही ज्यादा अच्छा होगा। (1 इतिहास 28:5; 2 इतिहास 13:8; यहेजकेल 21:25-27; लूका 1:32-33)

10.2 परमेश्वर के राज्य में कौन लोग रहेंगे?

(a) यदि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को मानते है, तो जब प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर वापिस आयेंगे तो वे हमें परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन प्रदान करेंगे। फिर हम लोग परमेश्वर के राज्य में, प्रभु यीशु मसीह की सहायता करेंगे। बहुत से साधारण अविश्वासी लोग भी अन्त के दिनों में, पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में कष्टो को सहते हुए रहेंगे। परमेश्वर द्वारा चुने हुए अमर विश्वासी लोग, इन दूसरे

अविश्वासी लोगों को परमेश्वर के मार्ग सिखायेंगे। (मत्ती 19:27-29; लूका 19:15-19; प्रकाशितवाक्य 5:10, 20:6; यशायाह 65:20-22; जर्कयाह 14:16-18)

10.3 परमेश्वर के राज्य में किस प्रकार का जीवन होगा?

(a) लोग पृथ्वी पर फसल उपजायेंगे और उनका कार्य अत्यन्त आनन्दित और प्रफुल्लित होगा। वे अद्वैत सच्चे परमेश्वर की अराधना करेंगे और उसकी आज्ञाओं को मानेगें।परमेश्वर उन्हें आनन्द और बिमारियों से चंगाई देगा। युद्व और नफरत न रहेगी। और लम्बे समय बाद अंतिम पुनरूत्थान और न्याय होगा। विश्वासी लोगों को अनन्त जीवन दिया जायेगा। (यशायाह 11:1-9, 2:14-20, 35:1-10; भजन संहिता 72; 1 कुरिन्थियों 15:24,28; प्रकाशितवाक्य 20:12-18; 21:4)

10.4 क्या अभी परमेश्वर के राज्य का निर्माण किया जा रहा है?

(a) जब तक प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर नही आयेंगे तब तक इस संसार के राज्य परमेश्वर के राज्य नहीं होगें (दानिय्येल 2:44, 7:27; प्रकाशितवाक्य 11:15-18)। लेकिन इस समय इस सृष्टि पर और राष्ट्रों के बीच होने वाली सभी घटनाओं पर परमेश्वर का नियन्त्रण है। (भजन संहिता 104:1; दानिय्येल 4:17)

(b) वर्षो से परमेश्वर लोगों को उसके राज्य में आने के लिए बुला रहा है (प्रेरितों 15:14; 1 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6)। इन लोगों को परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को स्वीकार करके उस पर विश्वास करके उसके अनुसार चलना चाहिये और बपतिस्मा लेकर अपने आप को परमेश्वर और उसके बेटे प्रभु यीशु मसीह के प्रति समर्पित करना चाहिये और अपने हृद्वयो में यीशु मसीह को प्रभु स्वीकार करना चाहिये

(1 पतरस 3:15)। इस प्रकार अपने आप को मसीह के पुन: आगमन के दिन के लिए तैयार रखना ही, परमेश्वर के राज्य का केन्द्र बिन्दु है।

11. सुसमाचार और प्रतिज्ञायें (The gospel & the promises)

11.1 सुसमाचार क्या है?

(a) सुसमाचार का अर्थ है एक "अच्छा समाचार"। यह अच्छा समाचार परमेश्वर के राज्य के विषय में है, और इस विषय में है कि हम कैसे उस राज्य में उद्धार प्राप्त कर सकते है। (लूका 8:1, मरकुस 1:14; मत्ती 4:17,23; रोमियों 1:16)

11.2 क्या सबसे पहले यीशु मसीह को सुसमाचार का प्रचार किया?

(a) नही। सुसमाचार का प्रचार अब्राहम को किया गया, जो यीशु मसीह के पैदा होने से लगभग 2000 वर्ष पूर्व था। (गलतियों 3:8)

(b) सुसमाचार "पूर्वजों से की गयी प्रतिज्ञायें" है। (प्रेरितों के काम 13:32)

11.3 परमेश्वर ने अब्राहम से क्या प्रतिज्ञायें की थी?

(a) परमेश्वर ने उसे सुसमाचार दिया। (गलातियों 3:8)

(b) परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह एक महान राष्ट्र का पिता होगा, और वह आशीषों का मूल होगा। (उत्पत्ति 12:2, 13:16, 17:4,6)

(c) अब्राहम से प्रतिज्ञा की गयी के सभी राष्ट्र उसके और उसके वंश के द्वारा आशीष पायेगें। (उत्पत्ति 12:3, 22:17-18)

(d) परमेश्वर ने अब्राहम से वाचा बान्धी कि, वह कनान देश सदा

सर्वदा के लिए उसको और उसके वंश को देगा। (उत्पत्ति 13:14-17, 15:7,12,17, 17:8; प्रेरितों के काम 7:5, मरकुस 12:26-27; इब्रानियों 11:8-9,39-40)

(e) परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसका वंश (मसीह) कनान देश में रहेगा और अपने सब शत्रुओं का अधिकारी होगा। (उत्पत्ति 12:7, 22:17; गलातियों 3:8,16,29)

(f) परमेश्वर ने प्रतिज्ञाओं को अब्राहम के बेटे, इसहाक और उसके पोते, याकूब, के साथ भी दोहराया। (उत्पत्ति 26:2-4, 28:4,13-14)

11.4 राजा दाऊद से परमेश्वर ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

(a) परमेश्वर ने दाऊद से प्रतिज्ञा की, कि उसका एक विशेष वंश होगा, जिसका पिता परमेश्वर होगा। (2 शमूएल 7:12-15; 1 इतिहास 17:11-12)

(b) परमेश्वर द्वारा दाऊद से की गयी प्रतिज्ञायें, उसके वंश में पूरी होगी, जो मसीह है (प्रेरितों के काम 2:30), जो दाऊद के सिहांसन पर राज्य करेगा। (भजन संहिता 89:28,34-36, 132:11)

(c) मसीह एक धर्मी उद्धारकर्ता भी होगा। (2 शमूएल 23:3-5)

(d) परमेश्वर ने दाऊद से प्रतिज्ञा की कि उसका घर परमेश्वर का घर होगा और मसीह सिय्योन में परमेश्वर का भवन स्थापित करेगा। (1 इतिहास 17:10,12,16; भजन संहिता 132:2-3; यशायाह 2:2-3)

11.5 क्या बाईबिल में इनके अतिरिक्त और भी प्रतिज्ञायें है?

(a) हाँ, मसीह से सम्बन्धित सबसे पहली प्रतिज्ञा हव्वा से तब की गयी जब परमेश्वर ने कहा कि हव्वा के "वंश" और सर्प के "वंश"

अर्थात पाप, के बीच बैर उत्पन्न होगा। (उत्पत्ति 3:15; भजन संहिता 91:13; लूका 10:19)

(b) नूह से भी परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञा की थी, कि वह अब कभी इस संसार को नष्ट नही करेगा। (उत्पत्ति 8:21, 9:9-17)

(c) परमेश्वर ने पीनहास से भी वाचा बांधी। (गिनती 25:13)

(d) यीशु मसीह ने भी अपने शिष्यों, डाकूओ और दूसरे लोगों से प्रतिज्ञायें की। (मत्ती 19:28; लूका 23:43)

(e) और अन्त में, ये प्रतिज्ञायें हम पर भी लागू होती है। (इफिसियों 3:6; इब्रानियों 10:36, 11:39-40; प्रकाशितवाक्य 2:7)

12. पुनर्रूत्थान, न्याय और अनन्त जीवन (Resurrection, judgment & eternal life)

12.1 बाईबिल के अनुसार पुनरूत्थान का क्या अर्थ है?

(a) मरे हुए लोगों का पुन: जीवित होना पुर्नरूत्थान है, जैसे प्रभु यीशु मसीह मरकर पुन: जीवित हुए। (प्रकाशितवाक्य 1:5; कुलुस्सियों 1:18; प्रेरितों के काम 26:23; 1 कुरिन्थियों 15:20)

12.2 पुनर्रूत्थान कब होगा?

(a) जब प्रभु यीशु मसीह पुन: इस पृथ्वी पर वापिस आयेंगे। (1 थिस्सलुनीकियो 4:16; यूहन्ना 5:28-29; 1 कुरिन्थियों 15:23)

12.3 क्या कब्र से बाहर आने वालो का न्याय होगा?

(a) हाँ, प्रभु यीशु मसीह पहले हम सबका न्याय करेंगे। वे ही यह सुनिश्चित करेंगे कि कौन अनन्त जीवन के योग्य है और कौन नही।

(रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 4:6; दानिय्येल 12:2; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)

12.4 क्या सभी लोग जिलाये जायेगें और यीशु मसीह द्वारा उनका न्याय किया जायेगा?

(a) यह परमेश्वर के अधिकार में है कि वह किसको मृतको में से जिलायेगा, लेकिन बाईबिल इस विषय में कहती है कि "जो मर गये है और दफनाये जा चुके है, उनमें से कुछ जिलाये जायेंगे" (दानिय्येल 12:2)। और यह भी लिखा है कि कुछ है जो कभी भी नही उठाये जायेंगे (यशायाह 26:14, 43:17)। बाईबिल से इन पदों को पढने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि जिन लोगों ने कभी भी परमेश्वर और उसके मार्गो को नही जानना चाहा वे नही जिलाये जायेंगे अर्थात नष्ट हो जायेंगे, जबकि जिन लोगों ने परमेश्वर के मार्गो को चुना और प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं को माना वे जिलाये जायेगें। (यूहन्ना 32:48; व्यवस्थाविवरण 18:18-19; मत्ती 25:14-30; रोमियों 2:12)

12.5 जो लोग मृतकों में से नही जिलाये जायेंगे, उनका क्या होगा?

(a) वे लोग कब्रो से कभी नही उठाये जायेंगे, बल्कि वे सर्वदा के लिए मरे रहेंगे। (भजन संहिता 49:20; नीतिवचन 21:16; यशायाह 26:14, 43:17)

12.6 जो लोग प्रभु यीशु मसीह के वापिस आने के समय जीवित रहेंगे; उनका क्या होगा?

(a) जो लोग न्याय के समय जीवित रहेंगे उनको स्वर्गदूतो के द्वारा मसीह के सम्मुख इकटठा किया जायेगा, ठीक उसी प्रकार जैसे मृतकों

में से जिलाये जाने वालो लोगों को किया जायेगा। स्वर्गदूतों द्वारा विश्वासियों को हवा से होकर एकत्र किया जायेगा, लेकिन अन्तिम गनतव्य हवा में नही होगा, क्योंकि न्याय पृथ्वी पर किया जायेगा, और परमेश्वर का राज्य भी पृथ्वी पर ही स्थापित होगा। (1 कुरिन्थियों 15:51; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17; मत्ती 25:31-32)

12.7 जिन लोगों को प्रभु यीश मसीह न्याय के दिन स्वीकार करेगें, उनका क्या होगा?

(a) उनको अनन्त जीवन दिया जायेगा, और यह जीवन वे प्रभु यीश मसीह के राज्य में पृथ्वी पर ही बितायेंगे। (दानिय्येल 12:3; मत्ती 25:20-21,34; दानिय्येल 7:27; प्रकाशितवाक्य 5:10; मत्ती 5:5)

12.8 क्या बाईबिल यह वायदा करती है कि विश्वासी लोग स्वर्ग में जायेंगे?

(a) नही, जैसा कि हमने ऊपरोक्त पदों में देखा कि बाईबिल यह वायदा करती है कि प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने वाले मसीही लोग सदा सर्वदा के लिए पृथ्वी पर जीवित रहेगें। बाईबिल यह भी बताती है कि यीशु मसीह को छोड और कोई भी स्वर्ग में नही गया। (भजन संहिता 115:16; प्रेरितों के काम 2:34; यूहन्ना 3:13)

नोट – कभी-कभी बाईबिल के कुछ पदों को कुछ लोग ऐसे समझते है कि मसीही लोगों से स्वर्ग में अनन्त जीवन देने का वायदा किया गया है। लेकिन यह देखा जा सकता कि यदि हम इन कुछ पदों के अर्थ को इस प्रकार समझे तो क्या ये बाईबिल की शेष शिक्षाओं से सहमत होते है। उदाहरण के रूप में यूहन्ना 14:2 में, यीशु मसीह ने कहा, "मेरे पिता का घर", तो इस पद में यह घर स्वर्ग में नही है। यूहन्ना 2:16

में, परमेश्वर का घर मन्दिर को कहा गया है। आत्मिक मन्दिर सबसे बडा मन्दिर है, और विश्वासी लोग उस बनाये जा रहे अध्यात्मिक मन्दिर के जीवते पत्थर है (1 पतरस 2:5)। इसलिए परमेश्वर का भवन पृथ्वी पर है, और इसीलिए प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "मैं फिर यहां आऊंगा और अपने साथ तुम्हें भी वहां ले चलूंगा।" (यूहन्ना 14:3)

12.9 जिनको प्रभु यीशु मसीह त्याग देंगे उनका क्या होगा?

(a) वे सुनेंगे कि मसीह ने उनको दोषी ठहराया है। वे देखेंगे कि धर्मी लोग परमेश्वर के राज्य में जा रहे है, जबकि वे स्वंय बाहर है। और अन्त में सदा सर्वदा के लिए उनकी मृत्यु हो जायेगी – यह प्रकाशितवाक्य 2:11 और 20:14 में वर्णित "दूसरी मृत्यु" होगी, जिससे कभी भी पुनरूत्थान नही होगा। (लूका 13:28; मत्ती 22:13, 25:46; भजन संहिता 145:20)

12.10 कुछ पद ऐसा क्यों बताते है कि जो लोग प्रभु यीशु मसीह के द्वारा त्याग दिये जायेगे, वे आग की झील में डाल दिये जायेंगे?

(a) प्रकाशितवाक्य 20:14 बताता है कि आग की झील, दूसरी मृत्यु के समान है। लोग कूड़ा करकट नष्ट करने के लिए आग का प्रयोग करते थे। बाईबिल में परमेश्वर ने आग को एक दृष्टान्त के रूप में प्रयोग किया है, जो यह दिखाता है कि जो लोग अयोग्य होंगे, वे पूरी तरह से नष्ट किये जायेंगे। (भजन संहिता 37:20, 68:2; मत्ती 3:11-12; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)

13. पवित्र आत्मा (The Holy Spirit)

13.1 पवित्र आत्मा क्या है?

(a) आत्मा का वास्तविक अर्थ श्वांस या हवा है। 'पवित्र आत्मा' या कभी-कभी कहते है कि "परमेश्वर कि आत्मा", परमेश्वर की सामर्थ को वर्णित करने का एक तरीका है।

(b) परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा ही ये दुनिया बनायी है। अपनी आत्मा के द्वारा ही परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह को पैदा किया। अपनी आत्मा के द्वारा ही परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को पवित्र शास्त्र लिखने के लिए प्रेरित किया। अपनी आत्मा के द्वारा ही परमेश्वर हर जगह विद्यमान है, और उसी के द्वारा वह हमारे सारे कामों को, हमारे विचारों को और हमारी बातों को जानता है। अपनी आत्मा के द्वारा ही परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह के पुन: आगमन पर, मृतकों को जीवित करेगा।

(c) परमेश्वर की यह सामर्थ "आत्मा" जब परमेश्वर के विशेष कार्य के लिए प्रयोग की जाती है, तो "पवित्र" कहलाती है। (लूका 1:35, 24:49; प्रेरितों के काम 1:8; उत्पत्ति 1:2; अय्यूब 33:4; भजन संहिता 104:30; यिर्मयाह 32:17; 2 पतरस 1:21; भजन संहिता 139:1-14; रोमियों 8:11; प्रेरितों के काम 7:51)

(d) अधिकांश नये नियम में "आत्मा" शब्द, शरीर और आत्मा के बीच होने वाले द्वन्द्व के लिए सांकेतिक रूप में प्रयोग किया गया है। ये केवल मसीह में "नये मनुष्यत्व" और आदम में "पुराने मनुष्यत्व" के लिए प्रयोग किया जाता है। (रोमियों 8:5-7; इफिसियों 4:20-24)

13.2 पवित्र आत्मा का दान क्या है?

(a) पवित्र आत्मा का दान परमेश्वर द्वारा, अपने कुछ दासों को दी जाने वाली उसकी विशेष सामर्थ है, जो उसने प्रेरितों के तुरन्त बाद अपने दासों को दी। इस सामर्थ के द्वारा ही कुछ चुने हुए लोगों ने, परमेश्वर के वचन को बोला और उसको लिखा, और दूसरे चमत्कार भी किये। प्रेरितायी, भविष्यवाणी, चंगाई और अन्य-अन्य भाषायें, पवित्र आत्मा के दान थे। (ऐसा कहा जाता है कि ये लोग बिना सीखे ही दूसरी भाषायें बोलते थे) कलिसीया को इन दानों के द्वारा, असाधारण कठिनाईयों में बडी सहायता मिली। इन दानों के द्वारा ही सुसमाचार दूर-दूर तक फैलना सम्भव हुआ। यह दो तरह से सम्भव हुआ। एक तो पुराने मसीही प्रचारक अन्य अन्य भाषायें बोलने में समर्थ हो पाये। दूसरे वे अपने सन्देश को चमत्कारों के द्वारा प्रमाणित कर पाये। इन दानो की सहायता से ही मसीही कलीसिया स्थापित की गयी और नये नियम को लिखना सम्भव हुआ। (प्रेरितों के काम 2:1-17; योएल 2:28-29; 1 कुरिन्थियों 12:7-11; रोमियों 15:18-19)

(b) पुराने नियम के समय में मूसा, एलिय्याह, एलीशा और दूसरे लोगों को यही सामर्थ दी गयी थी। पौलुस कहता है कि ऐसा समय आयेगा जब ये आत्मा के दान ले लिये जायेगें। जब मसीही कलिसीया स्थापित हो गयी और नया नियम पूरा लिखा गया तो ऐसा ही हुआ। यही कारण है कि आज किसी के भी पास ये दान नहीं है। जब प्रभु यीशु मसीह पुनः इस पृथ्वी पर आयेगें तो एक बार फिर, परमेश्वर के दासो को ये दान दिये जायेगें। (भजन संहिता 105:26-27; 2 राजा 2:9-15; 1 कुरिन्थियों 13:8-11; इब्रानियों 6:4-5)

13.3 आज जो लोग चमत्कार करने और अन्य-अन्य भाषा बोलने का दावा करते है, उनको हमें किस प्रकार समझना चाहिये?

(a) व्यवस्थाविवरण 13:1-3 में बाईबिल ऐसे लोगों को जांचने के विषय में बताती है।इस जांच में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उनके चमत्कार सही है कि नही, बल्कि देखना यह है कि क्या वे जो परमेश्वर के विषय में बोलते है वह ठीक है कि नही? यदि नहीं तो व्यवस्थाविवरण 13:3 बताता है, कि परमेश्वर ने तुम्हारी परीक्षा के लिए उन्हें भेजा है।

(b) ऐसे लोगों की शिक्षाओं की तुलना बाईबिल से करने पर यह पता चलता है कि ये झूठे है और परमेश्वर की समर्थ के अनुसार कार्य नही करते है। कभी-कभी ये लोग जानबूझकर धोखा देते है, यद्यपि अधिकांशत: वे स्वंय भी धोखा खाते है। ये लोग उन झूठे भविष्यवक्ताओं और जादूगरों के समान है जिन्होनें मूसा, प्रभु यीशु मसीह और प्ररितों के समय में, चमत्कार करने का दावा किया था। (निर्गमन 7:11,12,22; लूका 11:19; प्रेरितों के काम 8:9-11; मत्ती 24:24)

(c) चिकित्सीय अनुसधांनकर्ताओं ने बार-बार यह दिखाया, कि अधिकांश चगांई देने वालो की चंगाई, यदि वे धोखा नहीं दे रहे है तो, बहुत ही छोटे पैमाने पर और अस्थाई होती है। ठीक इसी प्रकार भाषाविद्वो ने भी रिकार्डिड टेपो के विश्लेषण से साबित किया कि ये अन्य-अन्य भाषायें कोई भाषा नही है। ये केवल बोलने वालो की मूल भाषा के कुछ शब्दो को बडबडाना है, और यदि ये सब सच है, तो पवित्र आत्मा के दान के द्वारा प्रेरितों द्वारा मृतकों को जिलाये जाने

वाले जैसे चमत्कार आज क्यों नहीं होते है?

13.4 क्या परमेश्वर की पवित्र आत्मा आज भी कार्य करती है?

(a) हाँ, परमेश्वर की आत्मा सदैव कार्यरत है (भजन संहिता 139:7-10)। मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की पवित्र आत्मा, उसके वचन, बाईबिल, के द्वारा सदैव कार्यरत है (यूहन्ना 6:63)। तब एक विश्वासी अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के वचन पर विश्वास कर लेता है, तो वह परमेश्वर का एक पापरहित वंश बन जाता है और परमेश्वर की आशीष उस पर होती है और बपतिस्में के द्वारा उसका एक नया जन्म होता है। (1 पतरस 1:23-25, 2:1-3)

(b) परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हम आत्मिक जीवन में प्रवेश करते है, और उसके द्वारा हम प्रभु यीशु मसीह में प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर तक पहुचतें है, और हमें दैनिक जीवन के लिए सामर्थ और परमेश्वर की आज्ञाकारिता प्राप्त होती है (इब्रानियों 2:18; 4:16; रोमियों 8:26-28)। परमेश्वर ने वायदा किया है कि वह हमें कभी नही छोडेगा। (इब्रानियों 13:5-6)

14. स्वर्गदूत (Angels)

14.1 स्वर्गदूत क्या है?

(a) स्वर्गदूत परमेश्वर के अविनाशी दूत है। स्वर्गदूत अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ रहे। स्वर्गदूतों ने, सदोम पर, परमेश्वर के न्याय, के विषय में चेतावनी दी। एक स्वर्गदूत ने मूसा को परमेश्वर की व्यवस्था दी। स्वर्गदूतों ने प्रभु यीशु मसीह के जन्म के विषय में, चरवाहों के सम्मुख, घोषणा की। आज भी अदृश्य स्वर्गदूत, परमेश्वर

के दासों की, सहायता करते है। जब प्रभु यीशु मसीह न्याय के लिए आयेगें तो स्वर्गदूत उनकी सहायता करेंगे। (लूका 20:36; भजन संहिता 103:20; प्रेरितों के काम 7:38; उत्पत्ति 19:1; लूका 2:9; भजन संहिता 34:7; मत्ती 18:10; लूका 22:43; मत्ती 24:31; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)

15. पाप, शैतान और दुष्टात्मा (Sin, Satan, & the devil)

15.1 पाप क्या है?

(a) जब हम परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करते है तो हम पाप करते है। (1 यूहन्ना 3:4)

15.2 हमें पाप का प्रलोभन कौन देता है?

(a) पाप का प्रलोभन हमारे अपने मन और शरीर के द्वारा आता है। हम अपनी "मानवीय प्रकृति" के कारणा पाप में गिरते है। पौलुस इसे अपने शरीर की "पाप की व्यवस्था" कहता है। कभी कभी हम किसी दूसरे मनुष्य द्वारा पाप के प्रलोभन में गिर जाते है। (याकूब 1:14-15; मरकुस 7:21-23; यिर्मयाह 17:9; रोमियों 7:18-25, 5:12; नीतिवचन 1:10)

15.3 शैतान क्या है?

(a) शैतान, मानवीय प्रकृति की बुराई के लिए प्रयोग होने वाला एक दृष्टान्त है। यह न बदलने वाली मानवीय प्रकृति है जिससे परमेश्वर प्रसन्न नही होता। परमेश्वर इस अप्रसन्नता को "शैतान" कहकर प्रकट करता है। कभी-कभी बुरे लोगों को भी "शैतान" कहा गया है।

(यूहन्ना 6:70; यूहन्ना 8:44; 1यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 2:10)

15.4 क्या होता है यदि हम मानवीय प्रकृति की बुरी इच्छाओं में गिरकर पापमय जीवन जीते है?

(a) हम मर जायेगें। इसीलिए बाईबिल बताती है कि शैतान (मानवीय प्रकृति) के पास "मृत्यु की सामर्थ" है। (रोमियों 6:23; इब्रानियों 2:14)

15.5 प्रभु यीशु मसीह ने शैतान के साथ क्या किया?

(a) बाईबिल बताती है कि प्रभु यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा शैतान को नष्ट कर दिया। इससे सिद्ध होता है कि शैतान नाम की कोई दिव्यशक्ति नही है।

(b) हमारी तरह ही प्रभु यीशु मसीह की भी मानवीय प्रकृति थी, और वे हमारी नाई परखे गये। इसका अर्थ है कि प्रभु यीशु मसीह ने भी हमारे समान ही, "शैतान" (अपनी मानवीय इच्छाओं) के विरूद्ध सघर्ष किया। लेकिन वे एक बार भी परीक्षा में नही गिरे और इस संघर्ष में जीते और इस प्रकार उन्होनें "शैतान" को हराया। पुर्नरूत्थान के बाद प्रभु यीशु मसीह को अविनाशी शरीर मिला और उसके बाद उन्हें परीक्षाओं का सामना नहीं करता पडा। उनके लिए, मानवीय प्रकृति (शैतान) नष्ट हो गया। (इब्रानियों 2:14, 4:15; रोमियों 6:6-10; 1 यूहन्ना 3:8)

15.6 'शैतान' का अर्थ क्या है?

(a) यह एक इब्रानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'विरोधी' (पुराना नियम इब्रानी भाषा में लिखा गया है।) कभी कभी इसको 'शत्रु' या एक नाम के रूप में भी अनुवादित किया गया है। पतरस ने प्रभु यीशु

मसीह का विरोध किया, इसलिए प्रभु यीशु मसीह ने उसे कहा, "दूर हो जा, शैतान।"

मानवीय प्रकृति परमेश्वर की सबसे बडी शत्रु है, और हमारी भी, इसलिए "नये नियम में", बहुत से स्थानों पर इसे "शैतान" कहा गया है। कुछ पदों में दुष्ट लोगों को भी "शैतान" कहा गया है। (प्रेरितों के काम 5:34; 1 थिस्सलुनीकियों 2:18; मत्ती 16:23; 1 तीमुथियुस 1:20)

नोटः बाईबिल के कुछ पदों की व्याख्या ऐसे की जाती है जैसे शैतान कोई दिव्य शक्ति है, लेकिन यह केवल सावधानीपूर्वक बाईबिल को न पढने का परिणाम है। उदाहरण के लिए यदि देखें तो, यशायाह 14:12 में वर्णित "भोर का तारा" (Lucifer), कोई स्वर्गदूत नही है। यह बाबुल के राजा के विषय में कहा गया है जो बहुत ही दुष्ट और घमण्डी मनुष्य था। यदि आप इस अध्याय को पद 4 से पूरा पढेंगे तो आपको मालूम हो जायेगा। इसी प्रकार यहेजकेल 28:14 में वर्णित "चुने गये करूब" बुरा स्वर्गदूत नही है। यह सोर के राजा के विषय में है जैसा कि पद 12 में वर्णित है।

16. दुष्ट आत्मायें और अशुद्ध आत्मायें (Demons & unclean spirits)

16.1 दुष्ट आत्मायें क्या है?

(a) बाईबिल में वर्णित दुष्ट आत्मायें, वास्तव में बिमारियां है और विशेषकर मानसिक रोगों को दुष्ट आत्मायें कहा गया है। जब इन बिमारियों को ठीक कर दिया जाता था, तो कहा जाता था कि दुष्ट आत्मायें निकल गयी है। कभी-कभी पाप को भी दुष्ट आत्मा कहा

गया है। (1 शमूएल 16:14; मत्ती 8:16-19, 12:22)

16.2 बहुत से लोग विश्वास करते है कि "दुष्ट आत्मायें" कोई अदृश्य जीवित प्राणी है। क्या एक मसीही को ऐसा विश्वास करना चाहिये?

(a) नहीं, कुछ कलीसियाये इस प्रकार के विश्वास को सिखाती है, जो की बाईबिल के अनुसार नहीं है। और सच नही है। बाईबिल ऐसे विश्वास को नही सिखाती। बाईबिल बताती है कि केवल परमेश्वर ही अपने इस सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड का स्वामी है। परमेश्वर, प्रभु यीशु मसीह, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों के अलावा कोई भी अन्य जीवित आत्मिक प्राणी नही है। स्वर्गदूत परमेश्वर की इच्छाओं को पूरी करते है इसलिए न तो वे कभी पाप करते है और न कभी मरते है। जैसा कि हमने पहले भी देखा कि "शैतान" और "दुष्टआत्माये" बाईबिल में केवल एक दृष्टान्त के रूप में प्रयोग की गयी है। वे पापमय मानवीय प्रकृति और बिमारियों को दर्शाते है, जो कि हमारे पापों के परिणाम है। (यशायाह 45:5-7; यिर्मयाह 10:5; आमोस 3:6; मत्ती 6:10)

17. अनन्त जीवन का मार्ग (The way to eternal life)

17.1 मैं प्रभु यीशु मसीह के राज्य में सदा के लिए जीवित रहना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिये?

(a) आपको अपने सम्पूर्ण हृदय से बाईबिल की शिक्षाओं पर विश्वास करना चाहिये। वह केवल तभी सम्भव है जबकि आप बाईबिल को नियमित रूप से और उत्सुकता से पढें। इसे प्रतिदिन पढें। (2 तीमुथियुस 3:14-17; भजन संहिता 119:147-148)

(b) आपको "मन फिराव" (repent) की आवश्यकता है; इसका अर्थ है कि आपको अपने पापों को स्वीकार करके, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करना है; और आपको परमेश्वर से वायदा करना होगा कि भविष्य में आप एक अच्छा जीवन जीने का प्रयास करेगें। (प्रेरितों के काम 3:19)

(c) आपको "बपतिस्मा" (baptism) लेना चाहिये। (प्रेरितों के काम 2:38-42)

(d) आपको अपना शेष जीवन प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीना चाहिये। (रोमियों 2:7)

18. बपतिस्मा (Baptism)

18.1 बपतिस्मा (baptism) क्या है?

किसी व्यक्ति द्वारा पानी में पूर्ण रूप से डुबकी लगाना बपतिस्मा है। (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-10; यूहन्ना 3:23; प्रेरितों के काम 8:36-39)

18.2 बपतिस्में का क्या अर्थ है?

(a) यह हमें इस बात को स्मरण कराता है कि प्रभु यीशु मसीह गाडे गये और फिर जी उठे और यह इस बात का प्रकटीकरण है कि हम उनकी मृत्यु और पुर्नरूत्थान के द्वारा बचाये जा सकते है। (रोमियों 6:3-4)

(b) यह हमें इस बात को स्मरण दिलाता है कि हम पापी है और मृत्यु के योग्य है। (यदि हमें पानी के अन्दर रखा गया तो हमारी मृत्यु निश्चित है।) (रोमियों 6:5-7)

(c) यह हमें स्मरण दिलाता है कि यह केवल परमेश्वर की दया है कि वह हमें पुर्नरूत्थान के द्वारा मृत्यु से बचाना चाहता है। इसलिए बपतिस्मा एक प्रकार की "मृत्यु" है – पानी में "दफनाया" जाना – और एक प्रकार का "पुर्नरूत्थान" है। यह मृत्यु और पुर्नरूत्थान का एक प्रदर्शन है। (कुलुस्सियों 2:12-13)

(d) यह इस बात को स्मरण दिलाता है कि जिस प्रकार पानी से सभी गन्दगी धुलकर दूर हो जाती है, वैसे ही परमेश्वर अपनी आज्ञा मानने वालो के पापों को दूर करता है। जब हम बपतिस्मा लेते है तो परमेश्वर हमारे सभी पापों को क्षमा करता है। इस प्रकार हम प्रभु यीशु मसीह के चेले के रूप में एक नयी शुरूआत करते है। (1 पतरस 3:21)

(e) यह इस बात का चिन्ह है कि हम परमेश्वर के बच्चे बन गये है और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अब्राहम के वंशज हो गये है और परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञाओं में सहभागी हो गये है। (गलातियों 3:26-29)

18.3 क्या हमें बपतिस्मा लेना आवश्यक है?

(a) हाँ, प्रभु यीशु मसीह ने बपतिस्मा लिया। पौलुस ने बपतिस्मा लिया। प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा के अनुसार, प्रारम्भिक कलिसियाओं ने बपतिस्मा लिया। बपतिस्मा आज्ञाकारिता का प्रदर्शन है। हमें बपतिस्मा लेना आवश्यक है, क्योंकि परमेश्वर ने बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी। (मत्ती 3:13-17; प्रेरितों के काम 2:37-41, 22:13-16; गलतियों 3:27-29; 1 पतरस 3:21)

18.4 क्या हम सुसमाचार को समझने से पहले बपतिसमा ले

सकते है?

(a) नहीं। हमें सबसे पहले सुसमाचार को समझना चाहिए, फिर उस पर विश्वास करना चाहिए, तब जितना जल्द सम्भव हो बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस 16:16; प्रेरितों के काम 8:12)

18.5 क्या बाईबिल बच्चों के बपतिस्में के विषय में बताती है?

(a) नही, कभी नही। बच्चे विश्वास नही कर सकते है, इसलिए उनका बपतिस्मा उचित नही है। (प्रेरितों के काम 8:12; यहाँ ध्यान देने योग्य शब्द "जब उन्होने विश्वास किया" और "पुरूष और स्त्री दोनो" है।)

18.6 क्या छिडकाव द्वारा बपतिस्मा देना या किसी व्यक्ति पर जल उडेलकर बपतिस्मा देना उचित है?

(a) नही। प्रभु यीशु मसीह और उसके चेलो ने पानी के नीचे डूबकर बपतिस्मा लिया, इसलिए हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। (मत्ती 3:16; प्रेरितों के काम 8:38-39)

19. मसीही जीवन (The Christian life)

19.1 क्या सहभागिता (communion) आवश्यक है?

(a) हाँ, बाईबिल में सहभागिता का अर्थ "रोटी तोडना" है (प्रेरितों के काम 2:42)। प्रभु यीशु मसीह ने हमें नियमित रूप से उनके बलिदान को याद करने के लिए प्रभु भोज में सम्मिलित होने की आज्ञा दी, जब तक कि वे पुनः वापिस न आये। रोटी उनकी देह का प्रतीक और दाखमधु उनके लहू का प्रतीक है। (1 कुरिन्थियों 11:26; यूहन्ना 6:53-56)

(b) जब हम बपतिस्मा लेते है तो हमारा नया जन्म होता है। एक नये जन्में बच्चे को नियमित समय अन्तराल पर भोजन की आवश्यकता होती है। "रोटी तोडना" (breaking bread) भी हमारे लिए आत्मिक भोजन है।

(c) बपतिस्में के द्वारा हमारे पुराने पाप क्षमा हो जाते है, लेकिन कमजोर मानवीय प्रकृति के कारण हम पाप में गिर जाते है। प्रभु भोज के द्वारा हम पुन: मसीह के बलिदान से जुड जाते है और हमारे पापों की क्षमा का नीवनीकरण होता है।

(d) प्रभु भोज हमें उस प्रतिज्ञा को याद दिलाता है जो हमने बपतिस्में के समय ली थी। यह पुन: समर्पण का समय होता है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि प्रभु यीशु मसीह वापिस आयेगें।

(e) इसके द्वारा, सह-विश्वासियों के साथ हमारी संगति मजबूत होती है। (1 कुरिन्थियों 11:23-29; मत्ती 26:26-28; 1 कुरिन्थियों 10:16-17; प्रेरितों के काम 2:42,46)

19.2 क्या हमें किसी विशेष दिन प्रभु भोज (रोटी तोडना) में सम्मिलित होना चाहिए?

(a) नही। सप्ताह के दिन में शाम के समय प्रभु ने चेलो के साथ अन्तिम भेजन किया। हमें समय-समय पर इसमें सहभागी होने के लिए कहा गया है। (1 कुरिन्थियों 11:26); लेकिन हमें यह नहीं बताया गया कि कितने समय बाद या कब, या किस दिन। पुराने चेले इसे सप्ताह के प्रथम दिन- रविवार; को ही रोटी तोडने में सहभागी होते है, लेकिन कुछ देशों में (जैसे नेपाल जहां शनिवार को साप्ताहिक अवकाश होता है), अन्य दिन भी लोग करते है।

19.3 क्या एक विश्वासी किसी के भी साथ राटी तोड सकता है?

(a) नही। रोटी तोडना, बपतिस्में के समान ही, मसीह की मृत्यु को स्मरण दिलाता है (1 कुरिन्थियों 11:26)। इन पदों में पौलुस बताता है कि हमने, एक ही आत्मा के द्वारा एक शरीर में बपतिस्मा लिया है (1 कुरिन्थियों 12:13)। अत: इससे साफ पता चलता है कि रोटी तोडने में सहभागिता केवल उन्ही के साथ होनी चाहिए जिनकी मसीह के विषय में समझ आप के समान हो और जिन्होनें एक ही शरीर में बपतिस्मा लिया हो।

19.4 अन्य कौन सी सेवायें विश्वासियों को करनी चाहिये?

(a) नये नियम में हम देखते है कि पुरानी कलिसीयाये सुसमाचार प्रचार करने के लिए भी इकट्ठी होती थी, और बाईबिल अध्ययन के लिए भी इकट्ठी होती थी। (प्रेरितों के काम 2:42, 5:42, 8:25, 17:17, 18:11, 19:8-9, 20:7)

19.5 क्या हमें विश्राम दिवस (Sabbath day) को मानना चाहिये?

(a) नहीं। दस आज्ञाओं में चौथी आज्ञा विश्राम दिवस (शनिवार) को पवित्र दिन के रूप में मानने की थी। दूसरी नौ आज्ञायें नये नियम में दोहरायी गयी, और इसलिए मसीहीयों को इन्हें मानना आवश्यक है। लेकिन प्रभु यीशु मसीह और उनके प्रेरितों ने, मसीहियों को विश्राम दिवस मानने के लिए नही कहा। यीशु मसीह की मृत्यु के बाद मूसा की व्यवस्था समाप्त हो गयी। (निर्गमन 20:10; गलतियों 5:14; रोमियों 14:5; 2 कुरिन्थियों 3:3-11; कुलुस्सियों 2:14)

19.6 कब-कब एक मसीही को अपनी बाईबिल पढनी चाहिये?

(a) यदि सम्भव हो तो, प्रतिदिन। दाऊद अपनी बाईबिल प्रत्येक सुबह और शाम को पढता था (भजन संहिता 119:147-148)। जो लोग बाईबिल पढने में समर्थ नही है, उन्हें अपने बच्चों को बाईबिल पढने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वे सुन सके या किसी ऐसे मसीही भाई के पास जाना चाहिए जो उसके लिए बाईबिल पढ सके, ताकि वे बाईबिल को सुन सकें। (प्रेरितों के काम 17:11)

19.7 एक मसीही को किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए?

(a) एक मसीही को सच्चा, ईमानदार, साधारण, शान्त, दयालु और उद्वार होना चाहिए। (रोमियों 12:1-21; गलातियो 5:22-23; इफिसियों 4:20-32, 5:1-5, 6:1-9; कुलुस्सियों 3:12-18)

(b) शुद्ध, साफ और पवित्र होना चाहिए। (1 तीमुथियुस 2:22; गलातियों 5:19-21; 1 कुरिन्थियों 6:9-11)

(c) "पियक्कड" नहीं होना चाहिये। (1 तीमुथियुस 3:3,8, 5:23; इफिसियों 5:18; रोमियों 14:20-21)

(d) विश्वासयोग्य और परिश्रमी होना चाहिये। (1 थिस्सलुनीकियों 4:11-12; 1 तीमुथियुस 5:8,13; प्रेरितों के काम 20:33-35; 1 कुरिन्थियों 9:18)

(e) बोलने में धीरजवन्त होना चाहिए। (मत्ती 18:15; इफिसियों 5:14; याकूब 3:3-12)

19.8 बाईबिल के अनुसार विश्वास का क्या अर्थ है?

(a) विश्वास का अर्थ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखना है। जैसे, नूह ने विश्वास किया कि परमेश्वर जल प्रलय लायेग; जहाज

बनाकर उसने अपने भरोसे (विश्वास) को दिखाया। एक अविश्वासी मनुष्य वह है जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखता; वह यह विश्वास नही करता कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। ऐसे व्यक्ति के लिए परमेश्वर झूठा है – जो वायदें करता है पर उन्हें पूरा नही करता।

(b) विश्वास मसीह जीवन का एक आवश्यक हिस्सा है। यदि हम विश्वास करते है कि मसीह द्वारा हमारे पाप क्षमा किये जायेगें तो इस विश्वास को हमें बपतिस्में के द्वारा दिखाना होगा। यदि हम विश्वास करते है कि परमेश्वर, प्रभु यीशु को इस दुनिया को साफ और पवित्र करने भेजेगा, तो हमें इस विश्वास को दिखाने के लिए अपने मनो को उसके द्वितीय आगमन के लिए तैयार करना होगा और प्रतिदिन इसके लिए प्रार्थना करनी होगी। विश्वास को प्रकट किये बिना एक मसीही बनना असम्भव है। (इब्रानियों 11:6-7; याकूब 2:21-26; गलातियों 3:6-9; 1 यूहन्ना 5:10; इफिसियों 2:8)

19.9 क्या एक मसीही विश्वासी को प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए?

(a) हाँ, परमेश्वर चाहता है कि हम नियमित रूप से उससे प्रार्थना करें। यीशु ने मनुष्य को सीखाने के लिए एक दृष्टान्त दिया और कहा, "नित्य प्रार्थना करनी चाहिए" जो मसीही लोग प्रार्थना नहीं करते है उनका शीघ्र ही परमेश्वर से सम्बन्ध टूट जाता है। हम देखते है कि कभी कभी तो प्रभु यीशु मसीह ने पूरी-पूरी रात प्रार्थना की। प्रार्थना हमारे जीवन का एक महत्पूर्ण हिस्सा होना चाहिए। यीशु मसीह, परमेश्वर के सम्मुख हमारे महायाजक है और हम उन्हीं के द्वारा

परमेश्वर से प्रार्थना करते है। (लूका 18:1; मत्ती 6:5-13; लूका 6:12; याकूब 5:16; इब्रानियों 10:19-22; रोमियो 12:12; प्रेरितों के काम 2:42; प्रकाशितवाक्य 5:8)

19.10 क्या एक मसीही के लिए बुरे लोगों से लडना उचित है?

(a) नही। कभी नही। प्रभु यीशु मसीह बुरे लोगों से घिरे थे, जिन्होने अन्त में उन्हें मार डाला, लेकिन इसके बावजूद भी उन्होनें किसी को कोई हानि नही पह्रुचांयी, इसी प्रकार हमें भी किसी को कोई नुकसान नहीं पह्रुचांना चाहिए - यहाँ तक की आत्म रक्षा के लिए भी नही। (लूका 9:54-56; मत्ती 26:51-52, 10:16, 5:38-48, रोमियों 12:18-21, 2 तीमुथियुस 2:24)

19.11 अपने देश के कानून के प्रति एक मसीही का कैसा व्यवहार होना चाहिए?

(a) एक मसीही को हमेशा अपने देश के कानून को मानना चाहिए, और उसका सम्मान करना चाहिए क्योंकि लिखा है कि, "अधिकारी परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गये है" (रोमियों 13:1-5)। एक मसीही को अच्छा कानून का मानने वाला होना चाहिए, और ईमानदारी से सभी करो का भुगतान करना चाहिए। (तीतुस 3:1; रोमियों 13:6-7; लूका 20:25)

(b) ऐसा बमुश्किल ही होता है कि किसी देश की सरकार ऐसा कानून, लागू करे जो परमेश्वर की व्यवस्था के विरोध में हो। (जैसे यदि हमसे मूर्तिपूजा के लिए कहा जाये या सेना में सम्मिलित होने के लिए कहा जाये) यदि ऐसा होता है तो हमें मनुष्य की नही, बल्कि परमेश्वर की व्यवस्था पर चलना है। (प्रेरितों के काम 5:29)

(c) एक मसीही को व्यभिचार से दूर रहना चाहिए। (1 कुरिन्थियों 6:18)

19.12 क्या अपने देश के विकास के लिए एक मसीही को राजनीति में भाग लेना चाहिये?

(a) नही। प्रभु यीशु मसीह ने अपने देश पर राज्य करने का प्रयास नही किया। उन्होनें अपने आप को दूसरो पर अधिकारी और शासक बनाये जाने का विरोध किया। प्रभु यीशु मसीह जानते थे कि उनका राज्य इस संसार का नही है और वे जानते थे कि उनका पहला कर्तत्य सुसमाचार प्रचार करना था। इसलिए एक मसीही को संसारिक मामलों से दूर रहना चाहिए।

(b) कभी-कभी सरकार ऐसे कार्य करती है जिन्हें एक मसीही समर्थन नही दे सकता – जैसे, युद्ध में जाना, जुओ को प्रोत्साहित करना। जहाँ तक सम्भव हो एक मसीही को अपने आप को सर्वजनिक मामलो से बाहर रखना चाहिए, और सुसमाचार प्रचार के लिए समर्पित रहना चाहिए और जरूरतमन्दो के लिए कार्य करना चाहिए। यही उदाहरण प्रभु यीशु मसीह ने हमारे सामने प्रस्तुत किया। (यूहन्ना 6:15; लूका 12:14; यूहन्ना 18:36; 2 तीमुथियुस 2:4)

19.13 क्या एक मसीही को राजनीति चुनाव में चुने जाने के लिए किसी को वोट करनी चाहिए?

(a) नही। किसी को वोट करने का अर्थ है, राजनीति में रूचि होना और एक मसीही को राजनीति में रूचि नही लेनी चाहिए। एक मसीही को उसी शासक को स्वीकार करना चाहिए जिसे परमेश्वर नियुक्त करता है, और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह

बुद्धिमानी से शासन कर सकें। (दानिय्येल 4:25; नीतिवचन 21:1; 1 तीमुथियुस 2:1-2)

19.14 क्या कोई ऐसा भी रोजगार है जिसे एक मसीही को नही करना चाहिये?

(a) हाँ। एक मसीही को ऐसा कोई भी कार्य (नौकरी) नही करनी चाहिए, जिसमें उसे किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति बल प्रयोग करना पडे। (जैसे सेना या पुलिस) उसे ऐसा कोई भी पद नही लेना चाहिए जिसके लिए उसे आज्ञाकारिता की शपथ लेनी पडे। एक मसीही को किसी व्यक्ति के प्रति वफादारी की शपथ नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि उसकी वफादारी मसीह के साथ है।

(b) एक मसीही को गैरमसीही स्थानों पर भी कार्य नही करना चाहिए जैसे – जुआघर, शस्त्र कारखाना, या शराब बेचने के स्थान पर, या अश्लील साहित्य की दुकान पर। (1 तीमुथियुस 5:22; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2)

19.15 क्या विवाह के विषय में बाईबिल कुछ मार्गदर्शन करती है?

(a) बाईबिल प्रभु में विवाह करने के लिए कहती है। (1 कुरिन्थियों 7:39)

(b) पति और पत्नि को एक दूसरे के प्रति दयालु और सच्चा होना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु यीशु मसीह अपनी कलिसीया के प्रति दयालु और सच्चे है। (1 कुरिन्थियों 11:3, 14:34-35; इफिसियो 5:22-33; कुलुस्सियो 3:18-19; 1 तीमुथियुस 2:8-15)

(c) बच्चों का पालन एक प्रसन्न परिवार में और स्नेही माता पिता के

सरक्षंण में होना चाहिए, जो उन्हें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने की शिक्षा दे। (2 कुरिन्थियों 7:14; इफिसियो 6:1-4; कुलुस्सियों 3:20-21; 1 तीमुथियुस 5:4)

(d) एक विश्वासी अपने पति या पत्नि को नही त्याग सकता, चाहे वह अविश्वासी ही क्यो न हो। (2 कुरिन्थियों 7:10-13)

क्रिस्टेडेलफियन
पो. ओ. बाक्स. - 10
मुजफ्फरनगर, 251002, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians
P.O. Box 10,
Muzaffarnagar 251002, U.P.